Rajkiya Snatkottar Mahavidyalaya, Joshimath, Chamoli

(Course Outcome & Program outcome)

Department Of Sanskrit

BA (SANSKRIT)

Program Outcome (POs)

PO1. शिक्षक
PO2. भाषावैज्ञानिक
PO3. अनुवादक
PO4. कवि
PO5. कथाकार
PO6. ज्योतिषाचार्य
PO7. योगाचार्य
PO8. पाण्डुलिपि विशेषज्ञ
PO9. वास्तुशास्त्रज्ञ
PO10. दार्शनिक

Course Outcome (COs)

B.A. 1ST Year

Course Name	Course Outcome (COs)
प्रथम प्रश्न पत्र – सुगम पाठ, व्याकरण एवं अनुवाद	COs1. 'नीतिशतकम्' के अध्ययन से दैनन्दिन जीवन में कृत्याकृत्य का परिज्ञान होना चाहिए तथा इसके अध्ययन से छन्द, अलङ्कार एवं रीति से सामान्यत: परिचित होना चाहिए। COs2. 'हितोपदेश' के 'मित्रलाभ' में वर्णित कथाओं के अध्ययन से युक्तायुक्त का अवबोध होना चाहिए। Cos3. 'लघुसिद्धान्तकौमुदी' के संज्ञाप्रकरण तथा सन्धिप्रकरण से स्वर, व्यञ्जन के स्वरूप, उच्चारणस्थान तथा इनकी सन्धियों का ज्ञान होना चाहिए, जिससे छात्र-छात्रायें इनके अनुप्रयोग में भी दक्ष हो सकते है।
द्वितीय प्रश्न पत्र – नाटक, अलङ्कार एवं छन्द	COs1. अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक में वर्णित दुष्यन्त एवं शकुन्तला की प्रणयकथा से भारतीय उच्च आदर्शों का ज्ञान होना चाहिए तथा नाट्य-तत्त्वों के प्रयोग का भी सामान्यत: परिज्ञान होना चाहिए। Cos2. छन्द-अलङ्कार के पाठन से छात्र छन्दोबद्ध एवं अलङ्कृत काव्य के सृजन में निपुण होने चाहिए। Cos3. नाट्य साहित्य का इतिहास इस विषय के माध्यम से छात्र संस्कृत साहित्य में व्याप्त नाट्यतत्त्वों एवं नाटककारों से परिचित होंगें, जिससे छात्र-छात्रायें काव्य-प्रणयन एवं काव्यालोचन में दक्ष हो सकते है।

Course Outcome (COs)

B.A. 2nd Year

Course Name	Course Outcome (COs)
प्रथम प्रश्न पत्र – गद्यकाव्य, प्राचीन एवं अर्वाचीन संस्कृत साहित्य का इतिहास	COs1. कादम्बरी के 'शुकनासोपदेश' से उच्च आदर्शों एवं मूल्यों का आविर्भाव होना चाहिए। COs2. 'शिवराजविजय' के अध्ययन से अपनी सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण तथा विपरीत परिस्थितियों में भी संघर्षरत रहते हुए राष्ट्र की सुरक्षा के प्रति जागृति होनी चाहिए। Cos3. 'प्राचीन एवं अर्वाचीन संस्कृत साहित्य का इतिहास' के माध्यम से छात्र प्राचीन एवं अर्वाचीन संस्कृत कवियों के कृतित्व एवं व्यक्तित्व से परिचित होने चाहिए तथा महाकाव्यों की काव्यात्मक पद्धति से भी परिचित होने चाहिए।
द्वितीय प्रश्न पत्र – वेद एवं दर्शन	COs1. ऋग्वेद के प्रचलित अग्निसूक्त, विष्णुसूक्त, पुरुषसूक्त तथा अथर्ववेदीय पृथिवीसूक्त में समागत मन्त्रों के ज्ञान से छात्र-छात्रायें अग्नितत्त्व, पृथिवीतत्त्व आदि की महनीयता से परिचित होने चाहिए। Cos2. व्यासकृत भगवद्गीता के द्वितीय अध्याय से कर्मवाद तथा आत्मवाद की भावना की जागृति होनी चाहिए। Cos3. 'तर्कसंग्रह' में व्याप्त प्रमाण एवं प्रमेय की पद्धति से छात्र-छात्राओं में दार्शनिक दृष्टि का जागरण होना चाहिए। Cos4. 'वैदिक साहित्य का इतिहास' के माध्यम से वेदों के रचनाकाल से लेकर ब्राह्मणसाहित्य, आरण्यकसाहित्य तथा उपनिषद्साहित्य का परिज्ञान होना चाहिए।

Course Outcome (COs)

B.A. 3rd Year

Course Name	Course Outcome (COs)
प्रथम प्रश्न पत्र – काव्यालोचन, योग, आयुर्वेद	COs1. 'साहित्यदर्पण' के माध्यम से काव्यशास्त्रीय सिद्धान्तों के अवबोधन तथा उनके अनुप्रयोग में दक्ष होना चाहिए। COs2. 'पतञ्जलिकृत योगसूत्र' के अध्ययन से अष्टाङ्गयोग, क्रियायोग तथा यौगिक सिद्धान्तों में दक्षता सम्भावित है। Cos3. 'चरकसंहिता-षड्ऋतुचर्या' के माध्यम से छात्र पथ्यापथ्यविवेक से परिचित होंगे, जिससे छात्र ऋतु के अनुकूल आहारादि के प्रति जागरुक होने चाहिए। Cos4. 'टोडरमल्लकृत वास्तुसौख्य' के माध्यम से छात्रों में वास्तुशास्त्र की सर्जना होनी चाहिए।
द्वितीय प्रश्न पत्र – उत्तराखण्ड का अर्वाचीन संस्कृत साहित्य, भारतीय संस्कृति एवं निबन्ध	COs1. 'पद्यकाव्य' के माध्यम से छात्र-छात्रायें उत्तराखण्डीय महाकवियों के काव्यशास्त्रीय योगदान से परिचित होने चाहिए तथा उत्तराखण्ड की संस्कृति के संरक्षण के प्रति जागरूक होंगें। Cos2. 'कथाकाव्य' के माध्यम से संवादात्मक पद्धति से परिचित होकर लेखनशैली का विकास सम्भावित है। Cos3. 'नाट्य' के माध्यम से रस-छन्द-अलङ्कार तथा रीति का परिज्ञान होना चाहिए, जिससे नाट्यकला का विकास सम्भावित है। Cos4. 'भारतीय संस्कृति' के माध्यम से पञ्च महायज्ञ, षोडश-संस्कारों तथा नित्य-नैमित्तिक कर्तव्यों के प्रति जागृति होनी चाहिए। Cos4. 'संस्कृत में निबन्ध' के अध्ययन से छात्र निबन्धलेखन तथा संस्कृतसम्भाषण की कला में दक्ष होने चाहिए।

Navneet
नवीन पन्त
असिस्टेन्ट प्रोफेसर
संस्कृत
राजकीय स्नातकोत्तर
महाविद्यालय,
जोशीमठ, चमोली